सर्वभाषा कवि सम्मेलन 2024 : एक रूपकात्मक प्रस्तुति

बात को बीते पूरे 5 बरस हो गए। 10 जनवरी 2019 को चेन्नई में आकाशवाणी द्वारा आयोजित सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन था। दिसम्बर 2018 में सुदूर असम की घाटियों में मेरे पास आकाशवाणी , दिल्ली से एक पत्र आता है कि आपका चयन सर्वभाषा कवि सम्मेलन में बोड़ो भाषा के अनुवादक कवि के रूप में हुआ है। मैं हतप्रभ था। इतनी दूर रहने के बावजूद भी आकाशवाणी ने मुझे खोज निकाला। मैंने जीवन में इतने कवि सम्मेलन और गोष्ठियों में भाग लिया है और ढ़ेर सारी कविताएं लिखी हैं मगर मैं सबको एक तरफ और चेन्नई में आयोजित इस सर्वभाषा कवि सम्मेलन को एक तरफ रखता हूं। इतनी आवभगत और पूरे देश को एक मंच पर मैंने कभी और कहीं नहीं देखा। मैं ही नहीं देश दुनिया से आए सभी कवि बहुत खुश थे । मैंने अपने गांव जाकर सबको इस सम्मेलन में भाग लेने का किस्सा सुनाया तो किसी को यकीन नहीं हुआ। यकीन करने वाली बात इसलिए भी नहीं थी कि ये सब हो भी कैसे सकता है । बाइस भाषाएं और उन सबका अनुवाद हाथों हाथ उसी धारा के अन्य कवि द्वारा। न उनका आपस में कभी बोल चाल, न मेल-मिलाप, न ही भाषाई समानता। मैंने यह महा-आयोजन देख आकाशवाणी को दिल से सैल्यूट किया। तब से हर बरस 25 जनवरी को रात दस बजे मैं सर्वभाषा कवि सम्मेलन अवश्य ही सुनता हूं।

इस बार तो इसका आनंद दुगुना हो गया। कार्यक्रम के आरंभ में रामअवतार बैरवा द्वारा लिखा गीत इतने मधुर स्वर और संगीत के साथ सुनकर हृदय साहित्य की वासंतिक लहरियों में गोते लगाने को विवश हो उठा। गीत यहां उद्धृत करना आवश्यक मानता हूं -

एक नदी की बाइस धारा

हर धारा पर उजियारा,

चमके धरती चमके अम्बर

चमके हिन्दुस्तां सारा

अक्षर अक्षर शब्द बने जहां

शब्दों शब्दों भाषाएं,

सदा ज्ञान के फूल खिलें

निस लेकर महकी आशाएं ।

संस्कृत से लेकर हिन्दी तक

हर भाषा में कविताएं,

हर भाषा के अनुवादक

घर घर कविताएं पहुंचाएं ।

देश-काल माहौल का जिसमें

होता है उत्तम लेखन,

ये है आकाशवाणी का

सर्वभाषा कवि सम्मेलन।

 ISSN:2583-8849

इस बार का यह आयोजन समर्पित भी युवाओं को था। सभी कविताएं, उनका अनुवाद और प्रस्तुतिकरण बहुत बेहतरीन था। आरंभ में अभय सिंह की संस्कृत कविता ने जहां हमारी पहचान और संस्कृति को मजबूत बुनियाद दी, वहीं अंतिम कवि डॉ. संजीव कुमार मुकेश ने राष्ट्र की गौरव गाथा को शब्दों को अनूठे बिम्ब दिए । दो घंटे के इस महा-आयोजन को एक पल के लिए भी छोड़ने का मन नहीं कर रहा था । सभी कवियों ने पूरी मेहनत और तन्मयता के साथ इस सम्मेलन को अपने अंजाम तक पहुंचाया। संस्कृत के अनुवादक कवि भारत भूषण रथ ने मूल कविता को भाव वही भाव देकर अद्भुत समां बांधा। प्राकृतिक आभा के नये रंग में रंगी कविता को असमिया के कवि अंकुर रंजन फुकन ने मंच पर जीवंत कर दिया और अनुवादक कवयित्री विभा राज वैभवी जब मंच पर उतरी तो उनके शब्दों के साथ-साथ बरखा भी आसमां से उतर आई । मूल और अनुवादक कवि श्रोताओं के बीच कविता पहुंचाने में बेहद सफल रहे । उड़िया कवि महादेव प्रधान की कविता इतिहास एक मानव का में कवि ने असमिया कविता की भावना को आगे बढ़ाकर उसे और अधिक गहरे तक उकेरा। अनुवादक कवि कमल किशोर बडाइक पूरी कुशलता के साथ अपनी भूमिका अदा करने में बेहद सफल रहे। उर्दू की कविता तो हर बार मंच लूटने में सफल रहती है। फौजिया रबाब ने इस परम्परा को जीवित रखा और पूरे सभागार को अपनी ग़ज़ल गंगा में बहा ले गई। कन्नड़ कवि संथेबैन्नुरू की कविता पिता, पुत्री के संबंधों को बेहतर बनाने में कामयाब रही। अनुवादक कवि आशीष श्रीवास्तव ने अपनी अदायगी से सबको लुभाए रखा । कोंकणी कवि विशाल गुरूदास सनाई की कविता ने अपने क्षेत्रीय परिवेश को नये रूप में प्रस्तुत किया। अनुवादक कवयित्री ममता वेर्लैकर बात को श्रोताओं तक परिपक्वता के साथ पहुंचा सकी। कश्मीरी कवि आसिफ साहिल और अनुवादक कवि परवेज गुलशन दोनों एक ही घर के वासी कश्मीर के रहे । टिमटिमाती नदी के सम्मुख बर्फ़ की बख्शीश रांची की हरीयल वादियों को लुभाती रही।

गुजराती कविता में प्रतिष्ठा पांडे ने औरत का जिंदा दृश्य सामने रखा। अनुवादक कवयित्री चन्द्रकान्ता सिवाल ने अपनी अभिनय क्षमता से सबको लुभाया। कीर्ति ठाकुर ने अपने डोगर प्रदेश से पूरे देश को मानवीयता का संदेश दिया । अनुवादक कवयित्री डॉ. कामना मिश्रा उस भाव को श्रोताओं तक पहुंचाने में बेहद सफल रही ।

तमिल कवि पी विष्णु कुमार

ने खेल की संवेदना को काव्य के बिम्बों में बांधा तो अनुवादक कवि टी के भारतन अक्षर अक्षर बात को सुनने वालों तक बेहतरी से पहुंचा सके । तेलुगू कवि डॉ. मोल्लीगोडा गंगा प्रसाद की कविता मानवीयता के मूल आधारों को छूती हुई दिल के किसी अनजान कोने में जाकर बैठ गई। अनुवादक कवि डॉ. नलिन विकास का अनुभव बात की तह में जाकर मतलब के बिम्ब निकाल लाया । नेपाली भाषा के कवि कर्ण बहादुर क्षेत्री ने एक पिता के ज़ख्म को कथा क्रम में प्रस्तुत कर श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी। अनुवादक कवि श्री प्रभात कुमार कविता को एक झांकी की तरह प्रस्तुत करते सुनाई दिए, जिसे देर । पंजाबी कवि तनवीर सिंह ने भी पिता के दर्द को मजबूरियों के जाल में ऐसा बुना की ज़ख्म दिखा भी नहीं और सारा हाल बयां हो गया। अनुवादक कवि सतिनाम सिंह वाहिद पंजाबी धरा के ही होने के कारण भाव को जन जन तक पहुंचाने में

ISSN:2583-8849

अपनी भूमिका को अमली जामा पहना सके । बांग्ला कविता में पार्थजीत चन्दा ने साहित्य की धूरी को संवेदना के धरातल पर खूब मांझा । अनुवादक कवि रामकुमार करौतिया उनके भावों को श्रोताओं तक पहुंचाने में पूरी आत्मीयता से जुटे नज़र आए ।

बिजित गोरा रामचिराय की बोड़ो कविता, काव्य के हर पक्ष को छूती हुई नज़र आई । अनुवादक कवयित्री उषा श्रीवास्तव इन पक्षों को ग़ज़ल के धागों में सफलता पूर्वक पिरोने में कामयाब रही । मणिपुरी कविता में अखोम यांदीबाला देवी की कविता मां की आवाज को हमेशा के लिए अपने सीने में दफन करने की टीस से उपजी और श्रोताओं को ममता के आंचल में छिपने को विवश कर गई । आकाशवाणी की कार्यक्रम अधिकारी

रश्मि कुकरेती इस भाव के हर तिनके को खनकती चूड़ियों के साथ चुनती दिखाई पड़ी । मैथिली कविता में कवयित्री डॉ. पुतुल प्रियमवदा ने मिथिला की माटी के मानवीय पीड़ा को ऐसे बयां किया

कि श्रोता सब कुछ भूलकर गले मिलने को आतुर हो उठे। अनुवादक कवि डॉ. अभिषेक सौरभ ने कविता के भाव को जब हुबहू गढ़ा और सुमधुर स्वर में पढ़ा तो रांची की शाम सुहानी होती चली गई। मलयालम कवि श्री एन एस सुमेश कृष्णन की कविता ने कविता की हर कली को पुष्प में रूपांतरित कर दिया, जिसकी खुशबू पूरे काव्य जगत में फैल गई। अनुवादक कवि ओमप्रकाश कल्याणे ने मूल भाव को हुबहू चित्रित करने का पुरजोर प्रयास किया और वे बेहद कामयाब रहे । मराठी कवयित्री कल्पना दुधाल ने पूरे इत्मीनान से एक लड़की के जीवन को दो हिस्सों में बांटकर जीवन की सीढ़ियों के बीच विवशता के मापन पर ला खड़ा किया। अनुवादक कवि मनोज मायंकर इस दर्द को सीढ़ी दर सीढ़ी समतल तक ले आने का बेहद सफल प्रयास करते दिखाई दिए । सिंधी भाषा की कवयित्री डॉ. भारती रामचंद सदारंगानी की कविता आधुनिकता की चौखट पर कविता के सारे तौर-तरीकों के साथ लड़की को एक बड़ा सबक देती हुई नज़र आई । अनुवादक कवि डॉ. सैय्यद नज़्म इकबाल ने पूरे नज़्मई अंदाज में श्रोताओं तक बात को पहुंचाया और इस शाम को सुहानी बना दिया। मुख्य सम्मेलन इस बार रांची विश्वविद्यालय के आर्यभट्ट सभागार में आयोजित किया गया था और अकाराधिक क्रम में संथाली भाषा का क्रम हिन्दी से पूर्व आया । मूल कवि श्री चन्द्र मोहन किस्कू और अनुवादक कवि श्री श्याम चरण टुडू अपने गांव की मांटी की महक को पूरे देश तक फैलाने में कामयाब रहे।

हिन्दी भाषा की पहली कवयित्री स्वाति शर्मा की दो मन नामक कविता समय के विमर्शों के बीच एक बाल्कनी से नये उत्साह की अनुभूति कराती दिखाई पड़ी । अंतिम कविता के रूप में संजीव कुमार मुकेश की कविता इस पूरे आयोजन की सार्थकता को सिद्ध करते हुए देश को एक सूत्र में पिरोने का संदेश दे गई ।

कुल मिलाकर यह पूरी काव्ययात्रा एक रूपकात्मक मार्ग पर चली । हर बार की तरह अगली कविता पहली कविता का आधार बनी ।राजश्री प्रसाद और कमल किशोर बडाइक का संचालन बहुत बेहतर रहा । राम अवतार बैरवा का आलेख और प्रस्तुति हमेशा की तरह बेजोड़ रहा ।

प्रस्तुति- सुरजीत मान जलईया सिंह

ISSN:2583-8849